ॐ

।। ॐ ह्रीं नमः ।।

।। ॐ ह्रीं दश महाविद्याभ्यो नमः ।।

शक्ति अनुसंधान केन्द्र

श्री दस महाविद्या संपूर्ण प्रयोग विवेचनम्

(परम पूज्य गुरुदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी द्वारा रचित दस महाविद्याओं पर 61 अनुपम एवं शीघ्र फलदायी लौकिक कामना पूर्ति हेतु महाप्रयोग)

विशेष आकर्षण

- महाविद्याओं पर 61 महाप्रयोग
- महाविद्याओं का विशेष ध्यान
- महाविद्या स्तोत्र
- महाविद्या कवच
- वास्तु संबंधित प्रयोग
- दीक्षा संस्कार

सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणभूषिताम्।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्।।

सौजन्य से :– **श्री अभिषेक कुमार**

ॐ

॥ ॐ ह्रीं दश महाविद्याभ्यो नमः ॥

–: महाविद्या साधना :–

दस महाविद्याओं पर आधारित जीवन के विभिन्न पक्षों को सिद्ध करने में सहायक ये 61 स्वर्णिम सूत्र, जो परमपूज्य गुरुदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज की कलम से लिखे गए हैं।

मानव जीवन को गतिमान करने में जितना मनुष्य का स्वयं का कर्म निर्भर करता है, उतना ही उसका भाग्य भी और यदि मनुष्य इसके साथ ही देवी-देवताओं का आश्रय भी ले लेता है, तो स्वयं भी पुरुषार्थ से ही अपनी भाग्य लिपि को लिख लेता है।

दैविक शक्तियाँ भी उन्हीं को सहयोग प्रदान कर पाती हैं, जो स्वयं में दृढ निश्चयी हों तथा स्वयं पर और अपने कार्यों पर पूर्ण विश्वास रखते हों। ऐसे ही व्यक्तियों को साधक कहा गया है और साधक अपने जीवन में जो इच्छा, जो कामना करता है, वह फलीभूत होती ही है। वह सदैव ऐसे ही अवसरों की ताक में रहता है, जब वह साधनाएं संपन्न कर अपने भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के जीवन की पूर्णता प्रदान कर सके। शिवरात्रि से नवरात्रि तक का समय अत्यंत साधनाात्मक एवं शक्ति अणुओं से संचरित है इस शुभ अवसर पर पूज्य गुरुदेव ने अत्यंत कृपा कर, साधकों तथा पाठकों की श्रद्धायुक्त प्रार्थना को स्वीकार कर अत्यंत दुर्लभ और सर्वथा नूतन तथा अचूक प्रयोगों का खजाना 'अपनी डायरी' के माध्यम से प्रदान की है और उस डायरी के स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित हीरक खण्डों में से 61 विशिष्ट प्रयोगों के प्रकाशन की अनुमति भी प्रदान की।

सभी साधकों के जीवन में यह एक अत्यंत जाज्वल्यमान अवसर होगा, जब वे इन सभी प्रयोगों में से अधिक-से-अधिक प्रयोगों को संपन्न करेंगे। शिवरात्रि से नवरात्रि तक इन प्रयोगों को कभी भी अपनी सुविधानुसार आप संपन्न कर सकते हैं। उसके बाद साधना सामग्री का विसर्जन नदी, तालाब या समुद्र में करना ही शास्त्रोचित होता है।

गुरु के मुख से उच्चारित आशीर्वाद शब्द से ही असंभव से असंभव कार्य भी सहज संभव हो जाते हैं, फिर इन प्रयोगों के बारे में और अधिक विवेचन की आवश्यकता ही कहाँ रही। यहाँ प्रस्तुत प्रयोग और मंत्र परम्परागत मंत्रों से थोड़ा हट कर है। अतः पाठक/साधक इस कारण भ्रमित न हों। गुरु कृपा से प्राप्त इन अमृत बिंदुओं का पान करने से कोई भी साधक अपने आपको तथा अपने परिवार के किसी सदस्य को वंचित नहीं होने देगा।

इन प्रयोगों के माध्यम से आप अपने भौतिक और आध्यात्मिक जीवन को पूर्ण रूप से अनुकूल बना सकते हैं। क्योंकि ये समस्त प्रयोग उन महाविद्याओं पर आधारित हैं, जो अत्यंत तीक्ष्ण मानी गयी हैं और जो सिद्ध होने पर साधक के जीवन की समस्त बाधाओं को समाप्त कर उसे पूर्णता और सफलता के उच्चतम सोपान पर प्रतिष्ठित कर देती हैं। इन साधनाओं को संपन्न कर निश्चय ही आप चतुर्दिक विजय और सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

महाकाली

ध्यान :– **या कालिका रोगहरा सुवन्द्या वश्यैः समस्तैर्व्यवहार दक्षैः।**
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री।।

मंत्र :– **ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं।**

1. यदि आपके जीवन में निरंतर शत्रुओं की संख्या में वृद्धि होती जा रही है और आप उनका सामना करने में स्वयं को असमर्थ अनुभव कर रहे हैं, तो निश्चय ही आप अपने शत्रुओं का सामना करने में सक्षम हो सकेंगे, काली के इस प्रयोग को संपन्न करके।

विधि :- काली यंत्र को लाल रंग के वस्त्र पर केसर से '**क्रीं**' लिख कर स्थापित कर लें। फिर यंत्र के सामने वीरासन में या पद्मासन में बैठकर उपरोक्त ध्यान कर, ऊपर दिए हुए मंत्र का तीन दिनों तक नित्य 21 बार जप करें। प्रयोग समाप्त होने पर यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें या होलिकाग्नि में डाल दें।

2. यदि कोई अकारण आपको हानि पहुंचाने के लिए निरंतर चेष्टारत रहता है, आपके प्रत्येक कार्य में बाधाएँ उत्पन्न करता रहता है, तो उसका दमन करने के लिए आप काली यंत्र को ताम्रप्लेट में लाल रंग से रंगे हुए चावलों पर स्थापित कर दें। यंत्र का पूजन पुष्प, कुंकुम तथा अक्षत से कर उपरोक्त ध्यान करें तथा उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप 7 दिनों तक नित्य करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को जप में प्रवाहित कर दें।

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com
हमारे सभी धार्मिक लेखों को online पढ़ने के लिए अवश्य log in करें :- www.shaktianusandhankendra.blogspot.com

3. यदि आप वाक् शक्ति, धन, संपत्ति, यश तथा पूर्णता प्राप्त करना चाहते हैं, तो सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से अष्टदल कमल बनाकर कमल के मध्य में 'काली यंत्र' का स्थापन करें। यंत्र का संक्षिप्त पूजन, कुंकुम, पुष्प व अक्षत से करें तथा तेल का दीपक जला दें।

अब दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें - ''हे देवी! मैं यह मंत्र जप संपन्न कर रहा हूँ, आप मुझे वाक् शक्ति, धन-धान्य, यश तथा पूर्णता प्रदान करें।'' फिर उपरोक्त मंत्र का 11 दिनों तक नित्य 51 बार जप करें। ग्यारह दिन बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

4. यदि आपको किसी कार्य को संपन्न करने में निरंतर बाधाओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, तो एक कागज में अपनी समस्या लिख कर उसमें 'काली यंत्र' का मौली से बांध दें तथा उसके समक्ष भगवती काली का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 101 बार उच्चारण कर किसी जल में विसर्जन कर दें। कार्य में शीघ्र सफलता की स्थितियाँ बनेंगी।

5. भगवती काली के प्रत्यक्ष दर्शन करने में भी साधक समस्त प्रकार की बाधाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। यदि आपकी इष्ट भगवती काली हैं और आप उनके प्रत्यक्ष बिम्बात्मक दर्शन करना चाहते हैं, तो लाल रंग के वस्त्र पर काली का बीज मंत्र **'क्रीं'** केशर से लिखें। फिर उपरोक्त ध्यान करते हुए उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए 'काली यंत्र' पर 21 पुष्प चढ़ाते हुए जप करें। यह प्रयोग 3 दिनों का है। इसे नित्य रात्रि में ही संपन्न करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

6. साधक को प्रतिदिन अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना ही पड़ता है। वह इन समस्त प्रकार के छोटी-छोटी बाधाओं से मुक्ति पाने के लिए 'काली यंत्र' पर मंगलवार की मध्य रात्रि में लाल पुष्प चढ़ाते हुए 11 बार उपरोक्त मंत्र का जप करें। यह प्रयोग एक दिन का है। इसके पश्चात् यह मंत्र जप वह पूरे वर्ष भर नित्य अपने दैनिक साधना क्रम में प्रयुक्त कर सकता है। परंतु यंत्र को ग्यारह दिनों के पश्चात् ही नदी में प्रवाहित कर दें या किसी निर्जन स्थान पर डाल दें।

तारा

ध्यान :– **ॐ श्वेताम्बरां शरद् चन्द्र कान्तिं सद्भूषणां चन्द्र कलावतंसाम्।**
कर्न्नीं कपालान्वित पाणि पद्मां तारां त्रिनेत्रां प्रभजेऽखिलद्धर्यै।।

मंत्र :– **ऐं ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्।।**

7. साधक में आलस्य या प्रभाव की अधिकता होने लगी हो, जिसके कारण साधना संपन्न करने में व्यवधान उत्पन्न होता हो, तो प्रमाद की समाप्ति के लिए तारा यंत्र को गुलाबी रंग के वस्त्र पर गुलाब के पुष्प का आसन बना कर स्थापित करें। फिर उपरोक्त ध्यान कर, यंत्र का पूजन केसर, पुष्प तथा अक्षत से करें। उपरोक्त मंत्र का सात दिनों तक नित्य 5 माला जप करें। सात दिनों के बाद यंत्र को उसी वस्त्र में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

8. साधक जब किसी साधना को आरंभ करना चाहता है, तो उसके आस-पास की परिस्थितियों के कारण उसका ध्यान निरंतर प्रभावित होता रहता है। साधना के दिनों में घर में अचानक कलह हो जाना या किसी का बीमार पड़ जाना जैसी बाधाओं के फलस्वरूप साधक एकाग्रचित्त हो कर साधना को संपन्न नहीं कर पाता है और अपेक्षित सफलता नहीं प्राप्त कर पाता।

इसके निदान के लिए शुक्रवार के दिन 'तारा यंत्र' को चावल की ढेरी पर स्थापित कर दें। यंत्र के समक्ष धूप तथा दीप लगाकर यंत्र का पूजन कर भगवती तारा का ध्यान करें। उपरोक्त ध्यान के पश्चात् उपरोक्त मंत्र का ग्यारह दिनों तक नित्य 51 बार उच्चारण करें। 11 दिनों के पश्चात् यंत्र को केले की वृक्ष की जड़ में दबा दें।

9. यदि आपके ऑफिस में परिस्थितियाँ आपके अनुकूल नहीं हैं या आपके विरोधी निरंतर आपसी विरोध का वातावरण बनाए रखते हैं, तो आप ऐसी परिस्थितियों में भी अपने ऑफिस के वातावरण को अपने पूर्णतः अनुकूल बना सकते हैं। इसके लिए यह प्रयोग संपन्न करें-

तारा यंत्र को गुलाबी रंग के वस्त्र पर केशर से बीज मंत्र **'स्त्रीं'** लिख कर स्थापित कर दें। यंत्र के समक्ष तारा ध्यान कर पूजन करें तथा उपरोक्त मंत्र का तीन दिनों तक नित्य 51 बार जप करें। इन दिनों में यंत्र को नित्य अपने साथ ऑफिस ले जायें। तीन दिनों के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

10. काव्य प्रतिभा या लेखन प्रतिभा को और अधिक निखारने के लिए तारा यंत्र को ताम्रपात्र में पान के पत्ते पर स्थापित करें। यंत्र स्थापन के बाद यंत्र के चारों ओर चावल सेगोल घेरा बना लें। यंत्र के समक्ष आओ से बना कर तीन दीपक लगायें तथा प्रत्येक दीपक पर क्रमशः पूर्ण एकाग्र हो कर पंद्रह मिनट तक उपरोक्त मंत्र का जप करें। मंत्र जप की समाप्ति पर तीनों दीपक को चौराहे पर रख दें। नित्य नया दीपक बना कर यह प्रयोग संपन्न करें। ऐसा ग्यारह दिनों तक नित्य करें। ग्यारहवें दिन यंत्र को भी दीपक के साथ रख दें।

11. यदि साधिकाएं स्वयं में प्रत्येक दृष्टि से श्रेष्ठता, संपन्नता प्राप्त करना चाहती हैं तो यह साधना करें। प्रातः ही स्नान कर गुलाबी साड़ी पहन लें। बाजोट पर गुलाबी वस्त्र बिछाकर उस पर ताम्रपात्र में स्वास्तिक का चिन्ह बना कर तारा यंत्र को स्थापित करें। फिर गुलाब के पुष्प यंत्र पर चढ़ाकर यंत्र का पूजन करें। भगवती तारा का ध्यान करते हुए उपरोक्त मंत्र का तीन दिनों तक नित्य 31 बार जप करें। तीन दिनों के बाद प्रयोग की समाप्ति के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

12. भगवती तारा के प्रत्यक्ष बिम्बात्मक दर्शन करने से भी साधक अनेक पाप दोषों से मुक्त हो जाता है। जो साधक भगवती तारा के उपासक हैं, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही संपन्न करना चाहिए।

सफेद रंग के वस्त्र पर उपरोक्त मंत्र को कुंकुम से लिखकर उस पर तारा यंत्र को स्थापित करें। उपरोक्त भगवती तारा के ध्यान के पश्चात् मंत्र का 75 बार जप करें। यह प्रयोग सात दिनों तक करें। सात दिन के पश्चात् यंत्र को किसी भी वृक्ष के नीचे दबा दें।

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी

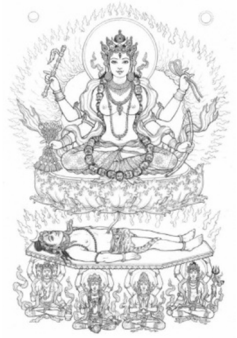

ध्यान – **ॐ उद्यत्सूर्य सहस्राभां पीनोन्नत पयोधराम्, रक्तमाल्याम्बरालेय रक्तभूषण भूषिताम्।**
पाशांकुश धनुर्बाण भास्वतपाणि चतुष्टयम्, रक्तनेत्रत्रयां स्वर्णमुकुटोद्भासि चन्द्रिकाम्।।

मंत्र – **ॐ ह्रीं ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं ह्रीं फट्।।**

13. प्रौढ़ावस्था में स्त्रियों में सौंदर्य की न्यूवता आने लगती है, जिसके कारण कई बार वे हीन भावना से ग्रस्त हो जाती हैं, परंतु वे चाहें तो अपने सौन्दर्य को स्थिरता दे सकती हैं। भगवती षोडशी के इस प्रयोग से -

शुक्रवार को प्रातःकाल ही स्नानादि कर लाल वस्त्र धरण करें। लाल रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से चतुर्दल कमल बनाएं तथा कमल के मध्य में कुंकुम से अपना नाम लिखें। चारों दलों में कुंकुम से बिंदियाँ लगा दें। अपने नाम के ऊपर षोडशी यंत्र स्थापित कर यंत्र का पूजन केसर, पुष्प तथा अक्षत से करें। पूजन के बाद उपरोक्त षोडशी ध्यान करें, फिर कुंकुम से रंगे हुए चावल के दानों को चढ़ाते हुए नित्य सात दिनों तक उपरोक्त मंत्र का जप 51 बार करें। नित्य मंत्र जप की समाप्ति के पश्चात् चावल के दानों को चिड़ियों को डाल दें। प्रयोग समाप्ति पर यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

14. सौन्दर्य, बुद्धि तथा चातुर्य प्राप्ति की इच्छा रखने वाली स्त्रियों को भगवती षोडशी का यह प्रयोग अवश्य संपन्न करना चाहिए।

लाल रंग के वस्त्र पर केसर से त्रिभुज बनाएं। त्रिभुज के मध्य 'ऐं' लिख कर उस पर षोडशी यंत्र को स्थापित कर दें। त्रिभुज के तीनों कोनों पर चावल की ढेरी बनाकर एक-एक सुपारी स्थापित करें। घी का दीपक लगाएं। उपरोक्त ध्यान करने के पश्चात् मंत्र का 13 दिनों तक नित्य 65 बार मंत्र जप करते समय अपनी दृष्टि यंत्र पर स्थिर रखें तथा पूर्ण श्रद्धा और विश्वासयुक्त चिंतन बनाकर रखें। 13 दिन बाद यंत्र एवं सुपारी को उसी वस्त्र में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

15. पुरुषों में जीवन के प्रति जो सौन्दर्य अनुभूति होती है, वह आयु व्यतीत हाने के साथ ही समाप्त होने लगती है, जिसके कारण वे मात्र कर्तव्य मान कर ही दाम्पत्य जीवन का निर्वाह करते रहते हैं। पर यदि वे चाहें, तो अपने आपको जीवन के प्रति सौन्दर्ययुक्त रख सकते हैं और सौन्दर्य अनुभूति को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

लाल रंग के वस्त्र पर कुंकुम से रंगे चावल की ढेरी पर षोडशी यंत्र को स्थापित करें। यंत्र के चारों ओर पाँच आटे के दीपक लगाएं। प्रत्येक दीपक में थोड़ी-सी सरसों डाल दें। पाँच दिनों तक नित्य षोडशी ध्यान कर 75 बार उपरोक्त मंत्र का जप करें। प्रत्येक दिन जप समाप्ति के बाद दीपक को हटा कर अलग स्थान में रख दें। पाँच दिन पश्चात् यंत्र तथा सभी दीपकों को एकत्र कर जल में प्रवाहित कर दें।

16. पूर्ण पौरुष, बल, आकर्षक देह यष्टि, बुद्धि और तीव्रता ही युवकों का सौन्दर्य होता है। यह पूर्ण पुरुषोचित्त सौन्दर्य आप भी प्राप्त कर सकते हैं, भगवती षोडशी के साधक बनकर।

लाल रंग के वस्त्र पर चावल से चतुर्भुज बनाएं। फिर मध्य में षोडशी यंत्र को स्थापित करें। इस यंत्र के चारों किनारे पर एक-एक गुलाब के पुष्प स्थापित करें। भगवती षोडशी का ध्यान करें और पीली हकीक माला से उपरोक्त मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप करें। मंत्र जप समाप्त कर यंत्र तथा माला को जल में प्रवाहित कर दें।

17. संपूर्ण आंतरिक और बाह्य सौन्दर्य की प्राप्ति भी साधक के जीवन में आवश्यक है। आंतरिक सौन्दर्य से ही व्यक्ति का हृदय स्वच्छ और निर्मल होता है, जो कि साधना सिद्धि के लिए आवश्यक है। साधक श्रद्धा और विश्वास के साथ यदि भगवती षोडशी का यह प्रयोग संपन्न करता है, तो अनेक प्रकार से लाभान्वित होता है। साधिकाओं के लिए तो यह प्रयोग अत्यंत श्रेष्ठ है। इसे संपन्न करने के बाद उनमें उत्साह, प्रेम, वात्सल्य तथा स्त्रियोचित गुणों का पूर्ण विकास होता है तथा यह सौन्दर्य दीर्घकालीन होता है। शुक्रवार से यह प्रयोग आरंभ करें। लाल रंग के वस्त्र पर पुष्प का आसन बनाकर 'षोडशी यंत्र' को स्थापित करें। नित्य 21 बार उपरोक्त मंत्र का जप पाँच दिनों तक करें। प्रत्येक मंत्र जप के साथ एक-एक लौंग चढ़ाते जाएं। पाँचवे दिन यंत्र तथा लौंग को वस्त्र में बांध कर नदी में प्रवाहित करें।

भुवनेश्वरी

ध्यान – **ॐ उद्यद्दिनद्युतिमिन्दु किरीटां तुंग कुचां नयनत्रययुक्तां।**
स्मेर मुखीं वरदांकुशपाशां भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम।।

मंत्र – **ॐ ह्रीं ॐ ।।**

18. साधकों के लिए साधनात्मक उन्नति के साथ-साथ सामाजिक उन्नति भी अत्यंत आवश्यक है। उनके जीवन में सामाजिक पूर्णता भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी आध्यात्मिक पूर्णता। अतः समाज में यश, सम्मान प्राप्त कर उसे स्थिर बनाए रखने के लिए यह प्रयोग संपन्न करें। साधक प्रातः ही स्नानादि से निवृत्त होकर पीली धोती धारण करें। पूजा स्थान को स्वच्छ कर कुंकुम से त्रिदल कमल बनाकर उस पर **'भुवनेश्वरी यंत्र'** स्थापित कर भुवनेश्वरी देवी का ध्यान करें। फिर यंत्र को देखते हुए 20 मिनट तक उपरोक्त मंत्र का जप करें। यह प्रयोग तीन दिनों का है। प्रयोग समाप्ति होने के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

19. यदि आप अपने मित्रों के मध्य यश, सम्मान और श्रेष्ठता पाना चाहते हैं, तो भुवनेश्वरी यंत्र को पीले रंग के वस्त्र में उपरोक्त मंत्र लिखकर बांध दें। फिर उसके समक्ष भुवनेश्वरी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 75 बार जप सात दिनों तक नित्य करें। सात दिन पश्चात् वस्त्र में बंधे हुए यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

20. यदि संतान आपकी उपेक्षा कर रही हो या आपका असम्मान करती हो, तो संतान में सुबुद्धि तथा उससे यश व सम्मान प्राप्ति के लिए भुवनेश्वरी यंत्र के समक्ष ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 61 बार जप करें। ग्यारह दिनों के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

21. पत्नी आपका सम्मान नहीं कर रही हो, निरंतर आपसे कलह के लिए प्रयत्नशील रहती हो, घर में अशांति बना कर रखती हो, तो आप यह प्रयोग करके अपनी पत्नी की मानसिकता में परिवर्तन ला सकते हैं। सफेद वस्त्र पर कुंकुम से अपनी पत्नी का नाम लिखें और उस पर भुवनेश्वरी यंत्र को स्थापित कर दें। यंत्र का पूजन कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करें। ध्यान के पश्चात् उपरोक्त मंत्र का 65 बार जप करें। यह प्रयोग दो दिन का है। प्रयोग समाप्ति होने पर यंत्र को उसी कपड़े में बांध कर जल में प्रवाहित कर दें।

22. पति यदि पत्नी का निरंतर अपमान करता रहता है या पत्नी के कार्यों में निरंतर गलतियाँ निकालता है, उससे अकारण विवाद करता है तथा पत्नी को हर समय सशंकित निगाहों से देखता है, तो पति को अपने अनुकूल बनाने के लिए निम्न प्रयोग करें -

लाल वस्त्र पर हल्दी को घोल कर उसे एक वृत्त बनाएं। वृत्त के मध्य में अपने पति का नाम लिखें। वृत के चारों ओर एक-एक सुपारी रख दें। भुवनेश्वरी यंत्र को पति के नाम के ऊपर स्थापित करदें। भुवनेश्वरी देवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप पाँच दिनों तक नित्य करें। प्रयोग समाप्ति पर यंत्र तथा सुपारी को होलिकाग्नि में डाल दें।

छिन्नमस्ता

ध्यान – **ॐ छिन्नमस्तां महाविद्यामक्षरात्म स्वरूपिणीं, विद्युदग्निसमुद्भूतां प्रसुप्तभुजगीतनुम्।**
कुण्डलीरूप संयुक्तां नानातत्वसमन्वितां, त्रिवलीवलयोपेतां नाना स्थान कृतां शुभाम्।।

मंत्र – **ॐ ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा।।**

23. किसी भी प्रकार की साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए छिन्नमस्ता देवी का यह प्रयोग संपन्न करें। छिन्नमस्ता का ध्यान कर छिन्नमस्ता यंत्र के सामने 51 बार उपरोक्त मंत्र का जप करें। फिर 21 बिल्व पत्र तथा हवन सामग्री साथ के साथ उपरोक्त मंत्र की 21 आहुतियाँ अग्नि में डालें। साधनाओं में सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

24. धन के निरंतर आगमन के स्रोत के लिए छिन्नमस्ता यंत्र का पूजन कर ध्यान करें। ध्यान के पश्चात् शहद तथा सफेद पुष्प से 21 आहुतियाँ अग्नि में दें। ऐसा करने से धन के आगमन का स्रोत खुलता है। यंत्र को सात दिन के पश्चात् नदी में प्रवाहित कर दें।

25. विद्या की कामना रखने वाले साधक छिन्नमस्ता यंत्र का पूजन कर ध्यान करें। फिर उपरोक्त मंत्र का 21 बार जप करें। नित्य यंत्र को अपने आज्ञा चक्र से लगाकर मंत्र का 21 बार जप करें। यह प्रयोग ग्यारह दिनों तक करें। ग्यारह दिन के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें। फिर साधक विद्याभ्यास करें। उसे सफलता अवश्य मिलेगी।

26. समस्त बाधाओं को समाप्त करने के लिए साधक छिन्नमस्ता यंत्र को मिट्टी के पात्र में रखें, उसमें पाँच काली मिर्च के दाने तथा लौंग रखें, उस पर सिंदूर डालें। फिर छिन्नमस्ता देवी का ध्यान कर के उपरोक्त मंत्र का तीन दिनों तक 41 बार जप करें। प्रयोग काल में धरती पर ही सोएं। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् पात्र को लाल रंग के वस्त्र में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

27. गृहस्थ व्यक्ति की अनेक कामनाएं ऐसी होती हैं, जिनकी पूर्त्ति करना उसके लिए सहज नहीं हो पाती हैं और उसे अपूर्ण इच्छाओं के साथ ही जीवन व्यतीत करना पड़ता है। ऐसी इच्छाओं की पूर्त्ति के लिए निम्नांकित प्रयोग करें -

छिन्नमस्ता यंत्र को शहद लगा कर रखें। फिर भगवती छिन्नमस्ता का ध्यान करते हुए उपरोक्त मंत्र का पाँच दिनों तक नित्य 31 बार जप करें। उस जल को तुलसी के पौधे में डाल दें, ऐसा नित्य करें। प्रयोग समाप्त होने के पश्चात् यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

त्रिपुर भैरवी

ध्यान – **ॐ बालसूर्य प्रभां देवीं जवाकुसुमसन्निभां, मुण्डमालामयीं रम्यां बालसूर्यनिभां शुकाम्।**
सुवर्ण कलशाकार पीनोन्नत पयोधराम्, पाशांकुशौ पुस्तकं च तथा च जपमालिकां।।

मंत्र – **ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं क्रीं फट्।।**

28. यदि आप व्यापारी हैं और किसी व्यापारिक कार्य को संपन्न करना चाहते हैं, परंतु वह कार्य सफल नहीं हो पा रहा है और आप इस कारण तनावग्रस्त है, तो अपने तनाव को अब समाप्त कर दीजिए।

किसी पात्र में कुंकुम से गोल घेरा बनाकर उसमें उपरोक्त मंत्र को लिखें तथा ऊपर त्रिपुर भैरवी यंत्र को स्थापित करें। यंत्र के समक्ष दीपक लगाएं तथा यंत्र का पूजन करें। फिर त्रिपुर भैरवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप पाँच दिनों तक नित्य करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को अपने दाहिने हाथ में लेकर अपनी कामना बोलते हुए नदी या सरोवर में प्रवाहित कर दें।

29. प्रमोशन पाना, नौकरी में अच्छे कार्यों के लिए सम्मान पाना एक नौकरी करने वाले व्यक्ति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यदि आपका प्रमोशन किसी कारणवश रुका हुआ है, तो आप एक कागज में अपनी इच्छा लिखकर उसमें त्रिपुर भैरवी यंत्र को बांध दें। फिर तिल तथा घी से त्रिपुर भैरवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र की 75 आहुतियाँ अग्नि में दें। जप समाप्ति के बाद यंत्र को कागज सहित यज्ञ कुण्ड में डाल दें।

30. किसी भी प्रकार की कामना की पूर्ति के लिए साधक रात्रि में इस प्रयोग को संपन्न करे। लाल रंग के वस्त्र पर केसर से स्वास्तिक बनाएं, उस पर त्रिपुर भैरवी यंत्र को स्थापित करें। इच्छित कामना को बोल कर त्रिपुर भैरवी का ध्यान करें। उपरोक्त मंत्र का सात दिनों तक नित्य 31 बार जप करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

31. आप जिससे विवाह करना चाहते हैं, यदि उससे विवाह करना संभव नहीं हो पा रहा है, तो मनोनुकूल जीवन साथी प्राप्ति के लिए यह प्रयोग संपन्न करें। त्रिपुर भैरवी यंत्र को पीले रंग से रंगे हुए चावल की ढेरी बनाकर स्थापित कर यंत्र पर केसर से अपना नाम लिखें। त्रिपुर भैरवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का तीन दिनों तक नित्य 65 बार जप करें। प्रयोग समाप्ति के दिन यंत्र तथा चावलों को नदी में प्रवाहित कर दें।

32. यदि आपका विवाह बार-बार निश्चित होकर भी टूट रहा हो या आपके विवाह में निरंतर बाधाएं आ रही हों, तो सफेद वस्त्र पर कुंकुम से स्वास्तिक बनाएं, स्वास्तिक पर यंत्र को स्थापित करें। भगवती भैरवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का नौ दिनों तक नित्य 31 बार जप करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

33. आप अपनी संतान के विवाह के लिए प्रयत्नशील हैं, परंतु उसके विवाह में बाधाएं आ रही हैं, तो उन बाधाओं को समाप्त करने के लिए यह प्रयोग संपन्न करें-

लाल रंग के वस्त्र पर केसर से चार बिंदियाँ लगायें तथा उस पर त्रिपुर भैरवी यंत्र को स्थापित करें। त्रिपुर भैरवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का होली के दिन ही 101 बार जप करते हुए चावल के दाने चढ़ाएं। मंत्र जप समाप्ति के पश्चात् चावल के दानों को चिड़ियों को खिला दें तथा यंत्र को किसी मंदिर में चढ़ा दें।

धूमावती

ध्यान – **ॐ विवर्ण चंचला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा, विमुक्त कुन्तला रुद्रा विधवा विरलद्विजा।**
काकध्वज रथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा, सूर्यहस्तातिरक्ताक्षी धूतहस्ता वरान्विता।
प्रबुद्ध घोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा, क्षुत् पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहप्रिया।।

मंत्र – **धूं धूं धूमावती ठः ठः।।**

34. कोई व्यक्ति आपको परेशान कर रहा है, तो उसे उसके स्थान से हटाने के लिए यह उच्चाटन प्रयोग करना चाहिए। हल्दी या केसर से उस व्यक्ति का नाम धूमावती यंत्र पर लिखें। यंत्र दोनों हाथों में लेकर भगवती धूमावती का ध्यान करें तथा सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

35. यदि कोई शत्रु आपके स्वजन तथा आपके मध्य में कलह करवाने का प्रयास कर रहा हो या आपके और आपके स्वजनों के मध्य द्वेष उत्पन्न करने का प्रयास कर रहा है तो इसकी समाप्ति के लिए यह प्रयोग करें। एक कागज पर काजल से त्रिशूल बनाकर उस पर धूमावती यंत्र को स्थापित करें। धूमावती का ध्यान कर, उपरोक्त मंत्र का 75 बार जप कर यंत्र को कागज में मौली से बांधकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।

36. यदि आप पर टोने-टोटके निरंतर होते रहते हैं, तो उसके प्रभाव की समाप्ति के लिए आप एक ताम्रपात्र में कुंकुम से 'धूं' लिखें और उस पर धूमावती यंत्र स्थापित करें। धूमावती का ध्यान कर यंत्र पर जल चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप करें। जप समाप्ति पर जल को किसी पौधे की जड़ में डाल दें। यह प्रयोग तीन दिनों तक करें। प्रयोग समाप्ति के दिन यंत्र के साथ पाँच लाल मिर्च तथा थोड़ा-सा नमक रख कर किसी कागज में बांध कर निर्जन स्थान पर फेंक दें।

37. घर के सभी सदस्य के ऊपर प्रकोप से सुरक्षा प्रदान करने के लिए धूमावती यंत्र को लाल रंग के वस्त्र पर स्थापित कर भगवती धूमावती का ध्यान करें। उपरोक्त मंत्र का तीन दिनों तक नित्य 71 आहुतियाँ घी तथा काले तिल से दें। तीन दिनों के बाद यंत्र को नदी के किनारे गढ्ढा खोद कर दबा दें।

38. कई बार घर के सदस्यों को परेशान करने के लिए शत्रु या दुष्ट प्रवृत्ति के लोग घर के शिशुओं पर तांत्रिक प्रयोग करवा देते हैं। उन छोटे-छोटे शिशुओं की सुरक्षा के लिए धूमावती यंत्र के सामने भगवती धूमावती का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 65 बार उच्चारण कर वह यंत्र शिशु के बिस्तर के नीचे सिरहाने रख दें। पाँच दिन के बाद शिशु के सिर पर यंत्र को तीन बार घुमाते हुए घर से दूर दक्षिण दिशा में फेंक दें।

बगलामुखी

ध्यान – **ॐ वादो मूकति, रंकति क्षिति–पतिर्वैश्वानरः शीतति, क्रोधी शान्ततिः, दुर्जनः सुजनति, क्षिप्रानुगः खंजति।**

गर्वो खर्वति, सर्व–विघ्न जड़ति त्वद् यन्त्रणा यन्त्रितः, श्रीनित्ये! बगलामुखि! प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः।।

मंत्र – **ॐ ह्रीं बगलामुखिं सर्वदुष्टानां ह्रीं वाचं मुखं बन्धय ह्रीं जिह्वां कीलय मारय त्रोटय ह्रीं फट्।।**

39. यदि आप स्वयं के व्यक्तित्व में इतनी अधिक तीव्रता और प्रखरता प्राप्त कर लें कि शत्रु आपका विरोध नहीं कर सकें, तो अपने व्यक्तित्व में प्रखरता और तेजस्विता लाने के लिए पीले रंग के वस्त्र पर कुंकुम से षट्कोण बना कर बगलामुखी यंत्र को स्थापित करें। षट्कोण के प्रत्येक कोण पर एक पीला पुष्प और अक्षत रखें। बगलामुखी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 75 बार जप तीन दिनों तक नित्य करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें। फिर 21 दिनों तक नित्य ग्यारह बार मंत्र जप करते रहें।

40. यदि शत्रु आपके विरोध में बोलता रहता है और आप जिस कार्य को संपन्न करना चाहते हैं, उस कार्य के संपादन में बाधाएं उत्पन्न करता है, शत्रु को स्तम्भित करने के लिए पीले रंग के वस्त्र पर कुंकुम से त्रिभुज बनाएं तथा त्रिभुज के मध्य में उस शत्रु का नाम लिखें। उसके नाम के ऊपर बगलामुखी यंत्र को स्थापित करें। यंत्र पर अपना दाहिना हाथ रखते हुए उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप करें। उसी दिन यंत्र को उसी वस्त्र में बांध कर पीपल के वृक्ष पर लटका दें या किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

41. शत्रु के व्यापार को बांधने के लिए पीले वस्त्र पर बगलामुखी यंत्र को स्थापित कर दें। पीले पुष्प और घी से यंत्र का पूजन करें और बगलामुखी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र की 101 आहुतियाँ दें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

42. शत्रु ने तांत्रिक प्रयोग कर आपके व्यापार को बांध दिया हो, तो उसके प्रयोग को निष्फल करने के लिए रात्रि के समय पीले रंग का वस्त्र बिछाकर बगलामुखी यंत्र को स्थापित करें। यंत्र पर हल्दी में रंगे हुए चावल चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का तीन दिनों तक 81 बार उच्चारण करें। तीन दिन पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

43. मुकदमे में सफलता प्राप्त करने के लिए तथा शत्रुपक्ष को बल विहीन करने के लिए कागज पर हल्दी से उपरोक्त मंत्र को लिख कर बगलामुखी यंत्र को उसी कागज में मौली से बांध दें। बगलामुखी देवी का ध्यान कर, उपरोक्त मंत्र का 35 बार जप करें। यह प्रयोग पाँच दिनों तक करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को दुर्गा मंदिर में चढ़ा दें।

44. शत्रु पक्ष की बुद्धि को स्तंभित करने के लिए बगलामुखी यंत्र पर काजल से शत्रु का नाम लिख कर यंत्र को दाहिने हाथ में रख कर बगलामुखी देवी का ध्यान करें। उपरोक्त मंत्र का 41 बार जप कर जल में प्रवाहित कर दें। शत्रु आपके विरूद्ध कुछ नहीं कर पाएगा।

मातंगी

ध्यान – **ॐ श्यामरूपधरां देवी मातंगी परमेश्वरीं। नेत्रत्रययुतां दिव्यां प्रभजे वेदसंस्तुताम्।।**

मंत्र – **ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।।**

45. यदि आपकी संतान का पढ़ाई में मन नहीं लगता है, तो मातंगी यंत्र का पूजन करें। भगवती मातंगी का ध्यान कर यंत्र के समक्ष 51 बार उपरोक्त मंत्र का जप करें। ऐसा ग्यारह दिनों तक नित्य करें। ग्यारह दिन के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

46. आप किसी विशेष क्षेत्र में सर्वोच्चता प्राप्त करना चाहते हैं तो सफेद वस्त्र पर केसर से स्वास्तिक बनाकर उस पर मातंगी यंत्र को स्थापित करें। मातंगी ध्यान कर यंत्र का 51 बार चावल के दाने चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का जप करें। मंत्र जप समाप्ति के पश्चात् यंत्र तथा चावल के दानों को किसी सरोवर या नदी में प्रवाहित कर दें।

47. अपने गर्भस्थ शिशु को आप पूर्णता प्रदान करना चाहते हैं तो सोमवार को प्रातःकाल ही उठकर स्नानादि कर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से स्वास्तिक बना कर मातंगी यंत्र को स्थापित करें। यंत्र का पूजन सफेद पुष्प, अक्षत तथा केसर से करें। फिर उपरोक्त मंत्र का 21 बार जप करें। यह प्रयोग सात दिनों का है। सात दिन के पश्चात् यंत्र को अपने पूजा स्थान में रख दें।

48. आप जिस क्षेत्र में हैं, उस क्षेत्र में आप पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, तो भगवती मातंगी का यह प्रयोग श्रेष्ठ है। मातंगी यंत्र को मातंगी देवी का ध्यान कर अपने दोनों हाथों में लें। यंत्र को हृदय से स्पर्श करायें। खड़े होकर उपरोक्त मंत्र का 51 बार पाँच दिनों तक नित्य जप करें। पाँचवे दिन यंत्र का नदी में प्रवाहित कर दें।

49. यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, पर बाधाएं उपस्थित हो रहीं हैं, तो उनकी समाप्ति के लिए मातंगी यंत्र को पाँच सफेद पुष्प के साथ लाल रंग के वस्त्र में बांधें। माता मातंगी देवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 51 बार उच्चारण करें। अपनी कामना बोल कर वस्त्र सहित यंत्र को घर से दूर किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें।

कमला

ध्यान – **ॐ श्वेताम्बर धरे देवि नानालंकार भूषिते। जगत् स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।**

मंत्र – **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।।**

50. आकस्मिक धन की प्राप्ति के लिए कमला यंत्र को लाल रंग के पुष्प पर स्थापित करें। भगवती कमला का ध्यान करते हुए पाँच दिनों तक नित्य उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप उच्चारण के साथ करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

51. यदि आप ऋण के भार से दबे हुए हैं और उससे निकलने का कोई उपाय नहीं दिख रहा है, तो ऋण से मुक्ति पाने के लिए सिी पात्र में केसर से **'श्रीं'** लिख कर उस पर कमला यंत्र को स्थापित करें। यंत्र पर कुंकुम से रंगे हुए चावल के 101 दाने चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का जप करें। यह प्रयोग तीन दिनों तक करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

52. निरंतर धन प्राप्ति के लिए कमला यंत्र को एक पात्र में पुष्प पर स्थापित करें। माता कमला देवी का ध्यान कर मधु तथा घृत से उपरोक्त मंत्र की 101 आहुतियाँ प्रदान करें। यह प्रयोग बुधवार को करें। फिर यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

53. घर में धन-धान्य स्थिर रहे, इस हेतु कमला यंत्र को बुधवार को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। फिर यंत्र के समक्ष 21 बार उपरोक्त मंत्र का जप ग्यारह दिनों तक नित्य करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को किसी मंदिर में चढ़ा दें।

54. जीवन में सभी प्रकार से सुखों का लाभ उठा सकें, इसके लिए कमला यंत्र पर केसर से अपना नाम लिखकर यंत्र को दाहिने हाथ में लें। यंत्र को देखते हुए माता कमला का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 61 बार उच्चारण करें। यह प्रयोग चार दिनों तक नित्य करें। चार दिन के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

55. आप अपने जीवन में यश, मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त कर पूर्ण भौतिक संपन्नता प्राप्त कर सकते हैं, इस प्रयोग के द्वारा।

सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से अष्टदल कमल बनाएं। कमल के मध्य में कमला यंत्र को स्थापित कर माता कमला का उपरोक्त ध्यान करें। उपरोक्त मंत्र का सात दिनों तक नित्य 91 बार जप करें। प्रयोग की समाप्ति के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

वास्तु देवता

मंत्र – **ॐ नमो वैश्वानर वास्तु रूपाय भूपति त्वं मे देहि दापय स्वाहा।।**

56. अपने भवन की सुरक्षा के लिए वास्तु यंत्र को अपने आँगन में उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप कर दबा दें। यदि घर में संभव न हो, तो घर से बाहर जहाँ पौधे लगे हों, वहाँ दबा दें। ऐसा करने से घर की सुरक्षा होती है।

57. गृहदोष के कारण या स्थान दोष के कारण उन्नति नहीं हो रही हो, तो इस दोष की समाप्ति के लिए वास्तु यंत्र को ताम्रपात्र में स्थापित करें। उपरोक्त मंत्र का 61 बार उच्चारण करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को किसी वस्त्र में लपेट कर नदी में प्रवाहित कर दें।

58. आपके घर से कलह, दुःख व दारिद्रय की समाप्ति हो, इसके लिए वास्तु यंत्र पर केसर से घर के सभी सदस्यों का नाम लिखकर उपरोक्त मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करें। यह प्रयोग पाँच दिनों तक नित्य करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को किसी चौराहे पर रख दें।

59. व्यापार स्थल की सुरक्षा के लिए जिससे कि कोई शत्रु आपके व्यापार स्थल को हानि न पहुँचा सके, वास्तु यंत्र का पूजन कर व्यापार स्थल पर स्थापित कर दें। नित्य यंत्र के समक्ष सात दिनों तक उपरोक्त मंत्र का 31 बार उच्चारण कर लें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

60. यदि व्यापार स्थल के दोष के कारण व्यापार में वृद्धि नहीं हो रही हो, तो 25 बार मंत्रोच्चारण कर वास्तु यंत्र को लाल रंग के वस्त्र में बांध कर दुकान के बाहर लटका दें। ग्यारह दिन बाद यंत्र को किसी निर्जन स्थान पर डाल दें। व्यापार में धीरे-धीरे वृद्धि होने लगती है।

61. आप जिस स्थान पर अपना व्यापार आरंभ करना चाहते हैं या भवन निर्माण करना चाहते हैं, वह स्थान आपको पूर्ण रूप से अनुकूलता प्रदान करे, इसके लिए आप वास्तु यंत्र को पीले रंग के वस्त्र पर स्थापित कर उसका पूजन कर उपरोक्त मंत्र का 75 बार जप कर नींव में ही दबा दें। भवन या व्यापार स्थल आपके अनुकूल बना रहेगा।

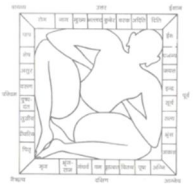

दीक्षा

व्यक्ति को पूर्णत्व प्रदान करने की दुर्लभ प्रक्रिया ही दीक्षा है। दीक्षाओं के माध्यम से ही शिष्य को कृतकृत्यता प्राप्त होती है। सद्गुरु की करुणा तथा शिष्य की कृतज्ञता का यह पावन सम्मिलन दीक्षा की उदात्ततम परिणति है। भगवान कृष्ण को भी दीक्षाओं से संदीपनी गुरु ने कलाओं से महानतम बना दिया। सांदीपनी की दीक्षाओं ने उन्हें पुरुषोत्तम बना दिया, जगद्गुरु बना दिया।

श्रद्धा और समर्पण दीक्षाओं के मूलभूत आधार तत्व है, इसके द्वारा ही गुरु से ज्ञानामृत दोहन से आप्लावित हो कर साधक अनंत सिद्धियों का स्वतः स्वामी बनता ही है। निश्चय ही वह व्यक्ति सौभाग्यशाली एवं धन्य होता है, जिसके जीवन में सद्गुरु दीक्षाओं के लिए ऐसा क्षण उपस्थित कर दें।

—: दीक्षा संस्कार :—

दीक्षया तत्पदम् आप्नुयात : दीक्षा से ही ईश्वर तक पहुँचा जा सकता है।

–: भौतिक दीक्षायें :–	–: आध्यात्मिक दीक्षायें :–
1. सर्वबाधा निवारण दीक्षा	1. ज्ञान प्राप्ति दीक्षा
2. ऋण मुक्ति दीक्षा	2. तंत्र बाधा निवारण दीक्षा
3. दुर्घटना नाशक दीक्षा	3. ज्योतिषज्ञान प्राप्ति दीक्षा
4. मनोकामना सिद्धि दीक्षा	4. पितृदोष निवारण दीक्षा
5. शीघ्र विवाह दीक्षा	5. योग सिद्धि दीक्षा
6. पुत्र/संतान प्राप्ति दीक्षा	6. इष्ट दर्शन दीक्षा
7. मुकदमों में सफलता प्राप्ति दीक्षा	7. महाविद्या सिद्धि दीक्षा
8. ग्रहबाधा दोष निवारण दीक्षा	8. महाकाली दीक्षा
9. गर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा	9. गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा
10. रोग मुक्ति दीक्षा	10. स्वतः भाग्य लेखन दीक्षा
11. भ्रम निवारण दीक्षा	11. कालज्ञान दीक्षा
12. विद्या प्राप्ति दीक्षा	12. साधना साफल्य दीक्षा
13. अकाल मृत्यु निवारण दीक्षा	13. जगदम्बा सिद्धि दीक्षा
14. तीव्र भाग्योदय दीक्षा	14. ब्रह्मत्व प्राप्ति दीक्षा
15. सौन्दर्य प्राप्ति दीक्षा	15. महामृत्युंजय दीक्षा
16. यश प्राप्ति दीक्षा	16. मंत्र/तंत्र/यंत्र सिद्धि दीक्षा
17. गृह क्लेश निवारण दीक्षा	17. वाणी सिद्धि दीक्षा
18. दाम्पत्य जीवन साफल्य दीक्षा	18. प्रेत बाधा निवारण दीक्षा
19. शत्रु बाधा निवारण दीक्षा	19. सम्मोहन प्राप्ति दीक्षा
20. मंगली दोष निवारण दीक्षा	20. आत्म उन्नति दीक्षा
21. व्यापार वृद्धि दीक्षा	21. कालसर्प योग निवारण दीक्षा

।। अथ श्री दसमहाविद्या स्तोत्रम् ।।

ॐ नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्डमुण्डविनाशिनी। नमस्ते कालिके कालमहाभय विनाशिनि।।
शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे। प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्।।
जगत् क्षोभकरीं विद्यां जगत् सृष्टिविधायिनीम्। करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्।।
हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्। गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालङ्कारभूषिताम्।।
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्। सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्।।
मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिंगशोभिताम्। प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्।।
उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम्। नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्।।
श्यामाङ्गीं श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्। प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्।।
विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्। आद्यामाद्यगुरोराद्यामाद्यनाथपूजिताम्।।
श्री दुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्। प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्।।
त्रिपुरां सुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्। शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्।।
सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणभूषिताम्। नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्।।
सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यां गुणवर्जिताम्। सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम्।।
विद्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्। महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम्।।
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम। रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम्।।
भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्। चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्।।
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्। अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।।
कमलां छिन्नभालाञ्च मातंगीं सुरसुन्दरीम्। षोडशीं विजयां भीमां धूमाञ्च बगलामुखीम्।।
सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्। प्रणमामि जगत्तारां साराञ्च मन्त्रसिद्धये।।
इत्येवञ्च वरारोहे, स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्। पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनी।।

(नोट :- भगवती काली के तांत्रोक्त ध्यान में भी इस महाविद्या स्तोत्र का कुछ लोग उपयोग करते हैं।)

।। दस महाविद्यां कवचम् ।।

श्रृणुदेवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्व सिद्धिदम्। आद्याया महाविद्यायाः सर्वाभीष्ट फलप्रदम्।।
कवचस्य ऋषिर्देवी सदाशिव इतीरितः। छन्दोऽनुष्टुव् देवता च महाविद्या प्रकीर्तितः।।
धर्मार्थ काम मोक्षाणां विनियोगश्च साधने।।
ऐंकारः पातु शीर्षे मां काम बींज तथा हृदि। रमाबीजं सदापातु नाभौ गुह्ये च पादयोः।।
ललाटे सुन्दरी पातु उग्रा मां कण्ठदेशतः। भगमाला सर्व गात्रे लिंगे चैतन्यरूपिणि।।
पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्माणी दक्षिणे तथा। उत्तरे वैष्णवी पातु च इन्द्राणी पश्चिमेऽवतु।।
माहेश्वरी च आग्नेयां नैर्ऋते कमला तथा। वायव्यां पातु कौमारी चामुण्डा हृशकेऽवतु।।
इदं कवचमज्ञात्वा महाविद्याश्च यो जपेत्। न फलं जायते तस्य कल्पकोटि शतैरपि।।

।। श्री महाविद्यां कवचम् ।।

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीमहाविद्या कवचस्य श्री सदाशिव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीमहाविद्या देवता, सर्व सिद्धि प्राप्त्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास - श्रीसदा-शिव-ऋषये नमः शिरसि, उष्णिक-छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहा-विद्या-देवतायै नमः हृदि, सर्व-सिद्धी-प्राप्त्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

मानस-पुजन -

ॐ लं पृथ्वी तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमहाविद्यां प्रीत्यर्थे समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहाविद्यां प्रीत्यर्थे समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु तत्त्वात्मकं धुपं श्रीमहाविद्यां प्रीत्यर्थे आघ्रापयामी नमः।
ॐ रं अग्नि तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा-विधा-प्रित्यर्थे दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल तत्त्वात्मकं नैवेद्यम् श्रीमहाविद्यां प्रीत्यर्थे निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व तत्त्वात्मकं ताम्बुलं श्रीमहाविद्यां प्रीत्यर्थे निवेदयामि नमः।

श्रीमहाविद्या कवच :–

ॐ प्राच्यां रक्षतु मे तारा, कामरुप निवासिनी । आग्नेयां षोडशी पातु, याम्यां धुमावती स्वयम् ।।१।।

नैर्ऋत्यां भैरवी पातु, वारुण्यां भुवनेश्वरी । वायव्यां सततं पातु, छिन्नमस्ता महेश्वरी ।।२।।

कौबेर्यां पातु मे देवी, श्रीविद्या बगला–मुखी । ऐशान्यां पातु मे नित्यं महात्रिपुर सुन्दरी ।।३।।

उर्ध्वं रक्षतु मे विद्या, मातङ्गी पीठवासिनी। सर्वतः पातु मे नित्यं, कामाख्या कालिका स्वयम् ।।४।।

ब्रह्मरुपा महाविद्या, सर्व विद्यामयी स्वयम्। शिर्षे रक्षतु मे दुर्गा, भालं श्रीभवगेहिनी ।।५।।

त्रिपुरा भ्रूयुगे पातु, शर्वाणी पातु नासिकाम्। चक्षुषी चण्डिका पातु, श्रीत्रे नीलसरस्वती ।।६।।

मुखं सौम्य–मुखी पातु, ग्रीवां रक्षतु पार्वती। जिह्वां रक्षतु मे देवी, जिह्वा ललन भीषणा ।।७।।

वाग्–देवी वदनं पातु वक्षः पातु महेश्वरी। बाहु महाभुजा पातु, करांगुलीः सुरेश्वरी ।।८।।

पृष्ठतः पातु भीमास्या, कट्यां देवी दिगम्बरी। उदरं पातु मे नित्यं, महाविद्या महोदरी ।।९।।

उग्रतारा महादेवी, जंघोरु परिरक्षतु। गुदं मुष्कं च मेढ्रं च, नाभिं च सुरसुन्दरी ।।१०।।

पदांगुलीः सदा पातु, भवानी त्रिदशेश्वरी। रक्तं मांसास्थि मज्जादीन, पातु देवी शवासना ।।११।।

महाभयेषु घोरेषु, महाभय निवारिणी। पातु देवी महामाया, कामाख्या पीठवासिनी ।।१२।।

भस्माचलगता दिव्य सिंहासन कृताश्रया। पातु श्रीकालिकादेवी, सर्वोत्पातेषु सर्वदा।।१३।।

रक्षाहीनं तु यत स्थानं, कवचेनापी वर्जितम्। तत्सर्वं सर्वदा पातु, सर्व रक्षण कारिणी।।१४।।

हिन्दी अनुवाद :-

कामनामयी भगवती तारा पूर्व दिशा में मेरी रक्षा करें, अग्नि दिशा में षोडशी, पश्चिम में धूमावती, नैर्ऋत्य में त्रिपुर भैरवी, वारूणी दिशा में भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता देवी वायव्य दिशा में मेरी रक्षा करें। उत्तर दिशा में विद्या बगलामुखी, ईशान दिशा में त्रिपुरसुन्दरी, ऊर्ध्व दिशा में भगवती मातंगी, सभी दिशाओं में कालिका कामाख्या रक्षा करें। ब्रह्मरूपा सभी वेदमयी महामाया सभी दिशाओं में रक्षा करें।

सिर की रक्षा भगवती दुर्गा करें, मस्तिष्क की शिवा करें, दोनों भौहों की रक्षा त्रिपुरा करें, नाक की रक्षा शर्वाणी करें। आँखों की रक्षा चण्डी और नील सरस्वती सिर की रक्षा करें। मुख की रक्षा सौम्यमुखी पार्वती करें। जिह्वा की रक्षा लपलपाती जीभ वाली काली करें। मुख की रक्षा वाग्देवी करें, वक्षस्थल की रक्षा महेश्वरी करें। भुजाओं की रक्षा महाभुजा, अंगुलियों की रक्षा सुरेश्वरी करें। पीठ की रक्षा भीमादेवी, कमर की रक्षा दिगम्बरी, पेट की रक्षा महादेवी करें, दोनों जंघाओं की रक्षा उग्रतारा करें।

गुदा, गुल्म एवं अंडकोष और नाभि की रक्षा सुरसुन्दरी करें। पैर की अंगुलियों की रक्षा भगवती त्रिदशेश्वरी करें। रक्त मांस, अस्थि तथा भुजा की सुरक्षा देवी शवासना करें। जीवन में अधिक भय होने पर सभी भय दूर करने वाली देवी कामाख्या रक्षा करें। चारों ओर से उत्पात होने पर भस्मांचल सिंहासन पर विराजमान श्रीमहाकाली रक्षा करें। जो स्थान असुरक्षित हों, जहाँ कवच पाठ संभव न हों, सर्वत्र सुरक्षा देने वाली भगवती महाविद्या उन स्थानों की रक्षा करें।

इस महाविद्या कवच को साधना के पश्चात् पाठ करने से दस महाविद्याएं साधक को सभी बाधाओं से सुरक्षित रखती हैं। वह अपने जीवन में निरंतर प्रगतिशील होता हुआ पूर्णता प्राप्त करता है।